सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्बोधन

जय नारायण विश्वविद्यालय,जोधपुर का
16वां दीक्षांत समारोह

दिनांक 09 दिसम्बर, 2019 **समय प्रात : 11.00 बजे**

विश्वविद्यालय परिसर, जोधपुर

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के 16 वें दीक्षान्त समारोह में उपस्थित माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी जी, कुलपति श्री बी.आर.चौधरी जी, विभिन्न संकायों के अधिष्ठातागण, निदेशकगण, सिण्डीकेट और सीनेट के माननीय सदस्यगण, सम्मानित शिक्षकगण, विद्यार्थियों, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओं और छायाकार मित्रों।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय की स्थापना दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राजनीति के शीर्ष महापुरुष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कर–कमलों द्वारा 14 जुलाई 1962 को जोधपुर विश्वविद्यालय के रूप में हुई थी। यह विश्वविद्यालय साढ़े पाँच दशक की अपनी शैक्षणिक यात्रा पूरी कर चुका है। किसी भी संस्थान की पहचान उसकी शैक्षणिक गतिविधियों से होती है। इस लम्बी यात्रा को करने में विश्वविद्यालय के विकास में भागीदारी निभाने वाले लोगों को मैं बधाई देता हूं।

शिक्षा समाज का दर्पण है। समाज की उन्नति अथवा अवनति शिक्षा पर निर्भर करती है। जिस समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होती है, वह समाज वैसा ही बन जाता है। चूँकि शिक्षा के उद्देश्यों का जीवन के उद्देश्यों से घनिष्ठ संबंध होता है, इसलिये शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करना भी ठीक ऐसे ही है जैसे जीवन के उद्देश्यों को निर्धारित करना। जैसा कि मुझे ज्ञात हुआ है कि शिक्षा के क्षैत्र में इस विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ से अनेक कानूनविद्, शिक्षाविद्, समाजसेवी, उद्यमी, अभियंता एवं राजनीतिज्ञ तैयार हुए हैं, जो देश और विदेश में विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ा रहे हैं।

आज आधुनिक सूचना एवं तकनीक से परिपूर्ण हमारे विश्वविद्यालय युवा पीढ़ी के लिये ज्ञान अर्जन के प्रमुख केन्द्र हैं। शिक्षा के इन मंदिरों से ही देश के कर्णधार तैयार होते हैं। मैं शिक्षकों का आहवान करता हूँ कि वह छात्र–छात्राओं को निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अद्यतन शिक्षा प्रणालियों एवं तकनीक से कराएँ।

विद्यार्थियों को मानवता, सहनशीलता, सत्यता व ईमानदारी के पाठ भी पढ़ाएँ। शिक्षा के उद्देश्य को ध्यान में रखकर स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि Man making & Character building अर्थात व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण, शिक्षा का मूल उद्देश्य है। व्यक्ति का विकास एक स्वस्थ दिशा में होता है, तो उसी प्रकार का उसका चरित्र बनता है।

मनुस्मृति में लिखा है कि ऐसा व्यक्ति जो सद्चरित्र हो, चाहे उसे वेदों का ज्ञान भले ही कम हो, उस व्यक्ति से अच्छा है, जो वेदों का पंडित होते हुए भी शुद्ध जीवन व्यतीत न करता हो। अतः प्रत्येक बालक के चरित्र का निर्माण करना, उस युग में आचार्य का मुख्य कर्त्तव्य समझा जाता था। आज समाज में नैतिकता, सद्चरित्र, दया, परोपकार जैसे जीवन मूल्यों की नितांत आवश्यकता है। इन जीवन मूल्यों के आधार पर ही आज की युवा पीढ़ी भारत के भविष्य को संवारने का कार्य करेगी।

युवा ही भारत का भविष्य है, इसलिए हमारा उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है कि उन्हें परम्परागत शिक्षा के साथ–साथ रोजगारपरक शिक्षा दी जाए। साथ ही कौशल विकास की शिक्षा युवाओं को दी जानी चाहिए ताकि वे शिक्षा पूरी करने के बाद आत्मनिर्भर बन सकें। किसी भी शिक्षा का बुनियादी उद्‌देश्य होता है कि वह विद्यार्थियों में स्वावलंबन की भावना विकसित करे।

वैश्वीकरण के दौर में विश्वविद्यालय के दायित्व बदल रहे हैं और जिम्मेदारियाँ भी बढ़ रही हैं। वर्तमान की चुनौतियों, विशेषकर विज्ञान, अभियांत्रिकी, कला, साहित्य, संस्कृति, मीडिया एवं तकनीकी विषयों में विद्यार्थियों को दक्ष किया जाना आवश्यक है।

मारवाड़ क्षैत्र में इस विश्वविद्यालय के होने के कारण मरूभूमि को आधुनिक भारत के अनुकूल कैसे ढ़ाला जाए इसके लिये भी शोध एवं अनुसंधान होने चाहिये।

इस अंचल में भारत सरकार के अनेक कृषि, विधि, तकनीक एवं औषधीय क्षेत्र के अनुसंधान केन्द्र संचालित हैं।

इन संस्थानों एवं केन्द्रों का सहयोग लेकर इस मरूस्थलीय अंचल को उपजाऊ, उर्वरायुक्त एवं हरा–भरा बनाने की आवश्यकता है।

आज पर्यावरण प्रदूषण का वैश्विक संकट है, इसलिए वृक्षारोपण के कार्य में गति प्रदान कर पर्यावरण को संरक्षित करना बहुत आवश्यक है। शिक्षा का लक्ष्य समग्र व्यक्तित्व का विकास करना है। इसलिए विद्यार्थियों में परीक्षा उत्तीर्ण करने की भावना से अधिक उन्हें ज्ञानवान बनाने की जरूरत है, जिससे वे विवेकसम्पन्न एवं तर्कशील बनकर राष्ट्र को समृद्धशाली बनाने में अहम योगदान दे सकें।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय ने 'नान्दड़ा कला' गांव को आदर्श गांव बनाने के लिये गोद लेकर सघन वृक्षारोपण के साथ आम जन के उपयोग हेतु अनेक कार्य किये हैं।

निःशुल्क नेत्र जाँच के साथ लैन्स प्रत्यारोपण, औषधि वितरण, विधवा एवं निर्धन महिलाओं के स्वरोजगार के लिए महिलाओं को निःशुल्क सिलाई मशीन वितरण, यहाँ के राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं अटल सेवा केन्द्र हेतु

निःशुल्क दस कम्प्यूटर प्रदान करने के साथ दो कम्प्यूटर लैब की स्थापना, साक्षरता शिविर, बालिका शिक्षा, बाल विवाह रोकथाम, स्वस्थ व स्वच्छ भारत अभियान और प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के माध्यम से जन–जन शिक्षा, घर–घर शिक्षा का अलख जगाने का सराहनीय प्रयास किया गया है।

मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये हुए इस गांव में ढ़ाई वर्ष के अन्तर्गत घर–घर कचरा संग्रहण हेतु प्रतिमाह पन्द्रह हजार रूपये के किराये के वाहन से गांव के लोगों में सफाई के प्रति जागरूकता लायी गयी है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपने को साकार करने की दृष्टि से प्रत्येक घर में शौचालय निर्माण की योजना से नान्दड़ा कला गांव के प्रत्येक घर में शौचालय बनाये जा चुके हैं।

मुझे जानकारी दी गई है कि नान्दड़ा कला गांव के आदर्श गांव से संबंधित सभी योजनाओं के पूर्ण हो जाने पर दूसरे गांव 'मोगड़ा कला' को भी आदर्श गांव बनाने के लिये राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत बच्चों का टीकाकरण और गांव में सघन वृक्षारोपण किया जा रहा है।

उन्नत कृषि की योजनाओं से कृषकों को जानकारी देना, पशुपालन हेतु पशुपालकों के साथ संवाद स्थापित करना, जल संरक्षण हेतु जागरूकता प्रदान करना, सौर ऊर्जा की उपयोगिता की जानकारी देना तथा 'खेलो इण्डिया' कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रीड़ा मैदान के निर्माण से संबंधित कार्य के विस्तार जैसी अनेक योजनाओं का शुभारंभ किया गया है। विद्यार्थियों के शिक्षण के साथ समाज को आत्मनिर्भर बनाने हेतु इस विश्वविद्यालय का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है।

संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक

अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्ड़ता व सामाजिक समरसता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालयों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के

अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

विश्वविद्यालय अपनी अकादमिक श्रेष्ठता और अद्यतन शोध द्वारा ही राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। विद्यार्थी एवं शोधार्थी जिम्मेदार नागरिक बनें। सच्चाई एवं ईमानदारी से दायित्वों का निवर्हन करें। राष्ट्र को विश्व पटल पर विश्व गुरू के रूप में स्थापित करने में एकजुट होकर सक्रिय एवं सार्थक भूमिका निभाएँ।

मैं एक बार पुनः उपाधि और पदक प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों, शोधार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई देता हूँ। धन्यवाद। जयहिन्द।